

आर्थिक असमानता और राजनीति

डा० अरविन्द कुमार शुक्ल¹

¹एसोसिएट प्रोफेसर राजनीति विज्ञान, राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बिन्दकी, फतेहपुर उ०प्र०

Received: 20 July 2025 Accepted & Reviewed: 25 July 2025, Published: 31 July 2025

Abstract

आर्थिक असमानता और राजनीति का संबंध परस्पर जटिल एवं बहुआयामी है। आर्थिक असमानता केवल आय और संपत्ति के वितरण में ही नहीं, बल्कि शिक्षा, स्वास्थ्य, अवसर और संसाधनों की उपलब्धता में भी परिलक्षित होती है। राजनीति, एक ओर, नीतिगत निर्णयों और संसाधनों के आवंटन के माध्यम से आर्थिक असमानता को कम या बढ़ा सकती है, वहीं दूसरी ओर, आर्थिक असमानता भी राजनीतिक भागीदारी, चुनावी परिणामों और नीतिगत प्राथमिकताओं को प्रभावित करती है। भारत जैसे विविधतापूर्ण और लोकतांत्रिक देश में आर्थिक असमानता का प्रभाव जातीय, वर्गीय, क्षेत्रीय और लिंग आधारित राजनीति में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। यह शोध-पत्र आर्थिक असमानता की संकल्पना, उसके कारणों, मापन की पद्धतियों, राजनीति पर इसके प्रभाव और अंतर्राष्ट्रीय तुलनात्मक दृष्टिकोण का विश्लेषण करता है। साथ ही, यह अध्ययन भारतीय संदर्भ में आर्थिक असमानता को कम करने हेतु उपयुक्त नीतिगत सुझाव भी प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्द— आर्थिक असमानता, राजनीति, लोकतंत्र, सामाजिक न्याय, आय वितरण, नीति निर्माण, अवसर असमानता, कल्याणकारी राज्य, वैश्वीकरण, जनसहभागिता

Introduction

आर्थिक असमानता केवल आय और संपत्ति के असमान वितरण का प्रश्न नहीं है, बल्कि यह समाज की राजनीतिक संरचना, नीतिगत प्राथमिकताओं और लोकतांत्रिक व्यवस्था की गुणवत्ता पर गहरा प्रभाव डालने वाला कारक है। जब समाज में एक वर्ग के पास संसाधनों और अवसरों की प्रचुरता होती है, जबकि अन्य वर्ग न्यूनतम आवश्यकताओं के लिए संघर्ष कर रहे होते हैं, तब सत्ता संतुलन असमान हो जाता है। यह असमानता राजनीतिक निर्णय-निर्माण की प्रक्रिया को भी प्रभावित करती है, क्योंकि आर्थिक रूप से सशक्त वर्ग न केवल नीति-निर्धारण में अधिक प्रभाव डाल सकता है, बल्कि चुनावी राजनीति में धनबल के माध्यम से जनमत को भी प्रभावित करने में सक्षम होता है। इतिहास में यह स्पष्ट देखा गया है कि आर्थिक असमानता का स्तर जितना अधिक होता है, राजनीतिक संस्थाओं में प्रतिनिधित्व का स्वरूप उतना ही विकृत हो सकता है। इससे नीतियाँ प्रायः संपन्न वर्गों के हित में केंद्रित हो जाती हैं, जबकि गरीब और हाशिये पर खड़े समुदायों की आवश्यकताओं की उपेक्षा होती है। इस प्रकार आर्थिक असमानता और राजनीति के बीच गहरा और जटिल संबंध है जहाँ एक ओर राजनीति आर्थिक नीतियों को निर्धारित करती है, वहीं दूसरी ओर आर्थिक ढांचा राजनीतिक परिदृश्य को आकार देता है। आज के वैश्वीकृत परिदृश्य में यह संबंध और भी जटिल हो गया है। वैश्विक पूंजी, मुक्त व्यापार, डिजिटल अर्थव्यवस्था और वित्तीय बाजारों ने देशों के भीतर और देशों के बीच असमानता को नई दिशा दी है। ऐसे में यह समझना आवश्यक है कि आर्थिक असमानता किस प्रकार लोकतंत्र, सुशासन और सामाजिक न्याय को प्रभावित करती है, और किस तरह से राजनीति के माध्यम से इसे कम या बढ़ाया जा सकता है। आर्थिक असमानता आधुनिक विश्व की सबसे गंभीर चुनौतियों में से एक है। यह केवल आर्थिक विकास की दर को प्रभावित नहीं करती, बल्कि सामाजिक

सामंजस्य, राजनीतिक स्थिरता और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं की गुणवत्ता पर भी गहरा असर डालती है। राजनीति, जो समाज के लिए संसाधनों का आवंटन और नीतियों का निर्माण करती है, आर्थिक असमानता को कम करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। किंतु, अनेक बार राजनीतिक हित और सत्ता-संतुलन आर्थिक नीतियों को इस प्रकार प्रभावित करते हैं कि असमानता और गहरी हो जाती है। अतः इस विषय का अध्ययन न केवल आर्थिक दृष्टि से, बल्कि सामाजिक और राजनीतिक दृष्टि से भी अत्यंत प्रासंगिक है। आर्थिक असमानता और राजनीति का संबंध मानव सभ्यता के आरंभिक चरणों से ही देखा जा सकता है। जब समाज ने उत्पादन, विनिमय और संपत्ति के स्वरूप को संगठित किया, तभी से संसाधनों के असमान वितरण और सत्ता संरचना के बीच घनिष्ठ जुड़ाव बनने लगा। यह ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य कई चरणों में हैं। प्रागैतिहासिक और प्रारंभिक सभ्यताएं शिकारी-संग्राहक समाज अपेक्षाकृत समानतावादी थे, क्योंकि उत्पादन सामूहिक था और निजी संपत्ति की अवधारणा सीमित थी। कृषि क्रांति (लगभग 10,000 ईसा पूर्व) के बाद अधिशेष उत्पादन की संभावना बढ़ी, जिससे भूमि पर नियंत्रण और संपत्ति का निजी स्वामित्व विकसित हुआ। मेसोपोटामिया, मिस्र, सिंधु और चीनी सभ्यताओं में शासक वर्ग (राजा, पुरोहित, सैन्य नेता) ने भूमि, श्रम और संसाधनों पर नियंत्रण स्थापित कर राजनीतिक शक्ति को आर्थिक संपदा से जोड़ा।

प्राचीन साम्राज्य और वर्ग व्यवस्था में प्राचीन यूनान और रोम में आर्थिक असमानता का आधार भूमि स्वामित्व और दास प्रथा थी। राजनैतिक भागीदारी (जैसे एथेंस का लोकतंत्र) भी संपत्ति और सामाजिक स्थिति पर आधारित थी; गरीब, दास और महिलाएं अधिकारों से वंचित रहती थीं। भारत में वर्ण-व्यवस्था और जातिगत पेशों ने सामाजिक-आर्थिक असमानता को स्थायी रूप दिया, जिससे राजनीतिक संरचना भी प्रभावित हुई। मध्यकालीन युग में यूरोप में सामंतवाद के तहत भूमि स्वामियों और किसानों के बीच गहरी असमानता रही; सत्ता सामंती प्रभुओं और राजाओं के पास केंद्रित थी। भारत में दिल्ली सल्तनत और मुगलकाल में जमींदारी एवं मनसबदारी प्रथा के माध्यम से भूमि से प्राप्त राजस्व ने राजनीतिक प्रभुत्व को बनाए रखा। इस दौर में धार्मिक संस्थाएं भी आर्थिक शक्ति का केंद्र थीं और राजनीतिक निर्णयों को प्रभावित करती थीं। औद्योगिक क्रांति और पूंजीवाद के समय 18वीं-19वीं शताब्दी में औद्योगिक क्रांति ने उत्पादन के साधनों का निजी स्वामित्व बड़े पूंजीपतियों के हाथ में केंद्रित कर दिया। औद्योगिक पूंजीवाद ने श्रमिक वर्ग और पूंजीपति वर्ग के बीच असमानता को और गहरा किया, जिससे श्रमिक आंदोलनों, ट्रेड यूनियन और समाजवादी विचारधाराओं का उदय हुआ। राजनीति में इसने उदार लोकतंत्र, सार्वभौमिक मताधिकार की मांग और श्रमिक अधिकारों की बहस को जन्म दिया। औपनिवेशिक काल और आर्थिक शोषण अर्थात् उपनिवेशवाद में राजनीतिक सत्ता विदेशी शासकों के पास और आर्थिक संसाधन उनके हित में दोहन के लिए प्रयोग हुए। भारत में ब्रिटिश शासन के दौरान भूमि कर व्यवस्था (जमींदारी, रैयतवारी) और उद्योगों के दमन ने आर्थिक असमानता को बढ़ाया और स्वतंत्रता आंदोलन को आर्थिक-सामाजिक आधार दिया।

20वीं शताब्दी में कल्याणकारी राज्य और विचारधाराओं का संघर्ष अर्थात् प्रथम और द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद कई देशों में कल्याणकारी राज्य की अवधारणा आई, जिसने शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक सुरक्षा के माध्यम से असमानता घटाने का प्रयास किया। सोवियत संघ और साम्यवादी देशों ने आर्थिक समानता को राजनीतिक विचारधारा का आधार बनाया, जबकि पूंजीवादी लोकतंत्रों ने बाजार और कल्याणकारी नीतियों का संतुलन अपनाया। औपनिवेशिक देशों में स्वतंत्रता के बाद भूमि सुधार, आरक्षण और सार्वजनिक क्षेत्र के विस्तार जैसे प्रयास हुए।

21वीं शताब्दी, वैश्वीकरण और नई चुनौतियाँ अर्थात् वैश्वीकरण, उदारीकरण और तकनीकी क्रांति ने एक ओर विकास के अवसर बढ़ाए, वहीं आय और संपत्ति में असमानता को भी बढ़ावा दिया। आर्थिक असमानता का असर चुनावी राजनीति, नीति-निर्माण और जनमत पर स्पष्ट दिखता है; बड़ी कॉर्पोरेट कंपनियाँ और संपन्न वर्ग राजनीतिक फंडिंग और लॉबिंग के माध्यम से नीति-निर्धारण पर प्रभाव डालते हैं। डिजिटल विभाजन, शिक्षा और स्वास्थ्य में असमानता, तथा ग्रामीण-शहरी अंतर ने नए राजनीतिक विमर्श को जन्म दिया। इतिहास दर्शाता है कि आर्थिक असमानता सिर्फ आर्थिक समस्या नहीं, बल्कि यह सत्ता संरचना, नीतियों और राजनीतिक स्थिरता को गहराई से प्रभावित करती है। जब-जब असमानता चरम पर पहुँची, तब-तब राजनीतिक संघर्ष, क्रांतियाँ और सुधार आंदोलन हुए। आज भी, लोकतांत्रिक देशों के लिए सबसे बड़ी चुनौती यही है कि आर्थिक असमानता को कम करके राजनीतिक व्यवस्था में व्यापक जनभागीदारी और न्याय सुनिश्चित किया जाए।

शोध का उद्देश्य और प्रासंगिकता— इस शोध का मुख्य उद्देश्य आर्थिक असमानता और राजनीति के बीच के अंतर्संबंधों का विश्लेषण करना है। अध्ययन का फोकस निम्न बिंदुओं पर है

1. आर्थिक असमानता के कारणों और प्रकारों की पहचान।
2. राजनीति पर आर्थिक असमानता के प्रभाव का अध्ययन।
3. भारत में आर्थिक असमानता के ऐतिहासिक और वर्तमान रुझानों का विश्लेषण।
4. अंतर्राष्ट्रीय उदाहरणों के माध्यम से तुलनात्मक दृष्टिकोण।
5. नीतिगत सुझाव, जिससे आर्थिक असमानता को कम किया जा सके और लोकतांत्रिक व्यवस्था मजबूत हो।

यह शोध-पत्र नीति निर्माताओं, शोधकर्ताओं, विद्यार्थियों और सामाजिक कार्यकर्ताओं के लिए उपयोगी होगा, जो असमानता और राजनीति के जटिल रिश्ते को समझना चाहते हैं।

शोध प्रश्न –

1. आर्थिक असमानता के मुख्य कारण क्या हैं और यह समाज में कैसे परिलक्षित होती है?
2. राजनीति किस प्रकार आर्थिक असमानता को प्रभावित करती है और इससे प्रभावित होती है?
3. भारत में आर्थिक असमानता के ऐतिहासिक और समकालीन स्वरूप क्या हैं?
4. अंतर्राष्ट्रीय अनुभवों से भारत क्या सीख सकता है?
5. आर्थिक असमानता को कम करने के लिए कौन-सी नीतिगत रणनीतियाँ सबसे प्रभावी हो सकती हैं?

परिकल्पना (Hypothesis)- आर्थिक असमानता और राजनीति के बीच द्विपक्षीय संबंध है जहाँ राजनीति आर्थिक असमानता को आकार देती है और आर्थिक असमानता राजनीतिक प्रक्रियाओं को प्रभावित करती है। उच्च आर्थिक असमानता लोकतांत्रिक भागीदारी को सीमित करती है और नीति निर्माण को विशेष वर्गों के हित में केंद्रित करती है। भारत में आर्थिक असमानता के बढ़ने का एक प्रमुख कारण उदारीकरण के बाद की आर्थिक नीतियाँ और संसाधनों के असमान वितरण की राजनीतिक प्रवृत्ति है।

शोध पद्धति (Research Methodology)– यह शोध वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक पद्धति का मिश्रण है। इसमें प्राथमिक और द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों का उपयोग किया गया है।

प्राथमिक स्रोत– सरकारी रिपोर्ट, नीति दस्तावेज, आर्थिक सर्वेक्षण, जनगणना डेटा।

द्वितीयक स्रोत– शोध-पत्र, पुस्तकें, पत्रिकाएँ, अंतर्राष्ट्रीय संगठनों की रिपोर्ट।

डेटा विश्लेषण के लिए सांख्यिकीय सूचकांक (जैसे गिनी गुणांक, पाम रेशियो, एच डी आई) का प्रयोग किया गया है। अध्ययन में भारत पर विशेष फोकस रखते हुए वैश्विक संदर्भ भी शामिल किया गया है।

आर्थिक असमानता की संकल्पना— आर्थिक असमानता का अर्थ है समाज में आय, संपत्ति, संसाधनों और अवसरों का असमान वितरण। यह असमानता केवल धन के असमान वितरण तक सीमित नहीं है, बल्कि शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, सामाजिक सुरक्षा, और राजनीतिक भागीदारी तक पहुँच में भी दिखाई देती है। आर्थिक असमानता को मापने के लिए विभिन्न सूचकांक (जैसे गिनी गुणांक, पाम रेशियो, और एचडीआई असमानता सूचकांक) का प्रयोग किया जाता है। यह असमानता स्थायी होने पर सामाजिक असंतोष, राजनीतिक अस्थिरता और आर्थिक विकास में बाधा उत्पन्न कर सकती है। आय असमानता तब उत्पन्न होती है जब समाज के विभिन्न वर्गों के बीच आय में बड़ा अंतर होता है। कुछ लोगों की मासिक या वार्षिक आय बहुत अधिक होती है, जबकि अधिकांश लोग न्यूनतम आय पर जीवनयापन करते हैं। जैसे भारत में शीर्ष 10 प्रतिशत आबादी के पास कुल राष्ट्रीय आय का लगभग 57 प्रतिशत हिस्सा है (Oxfam रिपोर्ट, 2023)। संपत्ति असमानता का अर्थ है भूमि, भवन, सोना, शेयर, और अन्य परिसंपत्तियों का असमान स्वामित्व। जैसे— भारत में शीर्ष 1 प्रतिशत लोगों के पास देश की 40 प्रतिशत से अधिक संपत्ति है। अवसर असमानता तब होती है जब सभी व्यक्तियों को शिक्षा, रोजगार, और सामाजिक उन्नति के समान अवसर नहीं मिलते। यह असमानता अक्सर जाति, लिंग, भौगोलिक स्थिति और आर्थिक पृष्ठभूमि पर आधारित होती है। सामाजिक असमानता आर्थिक कारकों के अलावा जाति, धर्म, भाषा, और लिंग पर आधारित भेदभाव से उत्पन्न होती है। यह असमानता राजनीतिक भागीदारी और प्रतिनिधित्व पर भी प्रभाव डालती है। विश्व स्तर पर आर्थिक असमानता एक गंभीर मुद्दा है। अमेरिका में 1980 के दशक से आय असमानता लगातार बढ़ रही है, न्यूनतम वेतन वृद्धि की धीमी दर और कर सुधार ने असमानता को गहरा किया। यूरोप में सामाजिक सुरक्षा प्रणाली और प्रगतिशील कर नीति ने असमानता को अपेक्षाकृत कम किया है। अफ्रीका में उपनिवेशवादी अतीत, संसाधनों के दोहन और राजनीतिक अस्थिरता के कारण आर्थिक असमानता उच्च स्तर पर बनी हुई है। भारत में आर्थिक असमानता के मूल कारणों में जातिगत भेदभाव, ग्रामीण-शहरी अंतर, शिक्षा एवं स्वास्थ्य में असमान निवेश, और आर्थिक नीतियों का असमान प्रभाव शामिल हैं। 1991 के उदारीकरण के बाद आर्थिक विकास दर में वृद्धि हुई, परंतु लाभ मुख्य रूप से उच्च आय वर्ग को मिला। ग्रामीण क्षेत्रों में बेरोजगारी और स्वास्थ्य सेवाओं की कमी ने असमानता को बढ़ाया।

आर्थिक असमानता के कारण— भारत में आर्थिक असमानता की जड़ें ऐतिहासिक रूप से गहरी हैं। जाति प्रथा में हजारों वर्षों तक सामाजिक और आर्थिक गतिविधियों का आधार जाति रही, जिसने कुछ वर्गों को संसाधनों से वंचित रखा। औपनिवेशिक शासन में ब्रिटिश शासन ने भूमि कर प्रणाली (जमींदारी, रैयतवारी, महालवारी) लागू की, जिससे आर्थिक संसाधन कुछ हाथों में केंद्रित हो गए। औद्योगिक क्रांति में विकसित देशों में तकनीकी प्रगति से अमीर देशों और गरीब देशों के बीच आर्थिक खाई बढ़ी। शिक्षा में असमानता ने गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुँच में असमानता ने रोजगार और आय में अंतर पैदा किया। स्वास्थ्य सेवाओं में असमानता ने गरीब वर्ग अक्सर गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं से वंचित रहता है। ग्रामीण-शहरी अंतर ने शहरों में औसत आय ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में कहीं अधिक है। कर नीति में असमानता ने प्रत्यक्ष कर की अपेक्षा अप्रत्यक्ष कर का बोझ गरीब वर्ग पर अधिक पड़ता है। संसाधनों का पक्षपातपूर्ण आवंटन ने राजनीतिक दबाव के कारण विकास योजनाएँ अक्सर कुछ विशेष वर्गों या क्षेत्रों पर केंद्रित होती हैं। वित्तीय सुधारों का असमान प्रभाव ने उदारीकरण, निजीकरण, और वैश्वीकरण के लाभ मुख्य रूप से उच्च आय वर्ग तक सीमित

रहे। वैश्वीकरण में बहुराष्ट्रीय कंपनियों और विदेशी निवेश ने आर्थिक विकास को बढ़ावा दिया, लेकिन इससे कौशल-संपन्न और अकुशल श्रमिकों के बीच आय का अंतर बढ़ा। तकनीकी बदलाव से ऑटोमेशन और डिजिटलाइजेशन ने उच्च-कौशल नौकरियों की मांग बढ़ाई, जबकि कम-कौशल श्रमिक बेरोजगारी के संकट से जूझने लगे।

तालिका 01

कालानुक्रमिक सारणी – आर्थिक असमानता और राजनीति

कालखंड	आर्थिक व्यवस्था	असमानता का स्वरूप	राजनीतिक प्रभाव	उदाहरण
प्रागैतिहासिक काल (कृषि पूर्व)	सामूहिक उत्पादन, शिकारी-संग्राहक	लगभग समानतावादी	औपचारिक सत्ता संरचना नहीं	अफ्रीका व एशिया की प्रारंभिक जनजातियां
कृषि क्रांति (10,000 ई.पू.)	कृषि आधारित अधिशेष उत्पादन	भूमि स्वामित्व पर आधारित	मुखिया, राजा और पुरोहित का प्रभुत्व	मेसोपोटामिया, मिस्र, सिंधु घाटी
प्राचीन साम्राज्य (500 ई.पू.-500 ई.)	दास प्रथा, कर व्यवस्था	भूमि और श्रम पर प्रभुत्व	सीमित लोकतंत्र या राजतंत्र	यूनान, रोम, मौर्य साम्राज्य
मध्यकालीन युग (500-1500 ई.)	सामंतवाद, जमींदारी	किसान, जमींदार विभाजन	सामंती प्रभुओं की राजनीतिक शक्ति	यूरोप का सामंतवाद, भारत की जमींदारी
औद्योगिक क्रांति (1750-1900)	औद्योगिक पूंजीवाद	पूंजीपति, श्रमिक असमानता	श्रमिक आंदोलन, ट्रेड यूनियन	ब्रिटेन, जर्मनी, अमेरिका
औपनिवेशिक काल (1757-1947)	उपनिवेशी शोषण	संसाधनों का विदेशी नियंत्रण	स्वतंत्रता आंदोलन	

तालिका 02

भारत, अफ्रीका, लैटिन अमेरिका

20वीं सदी (मध्य)	कल्याणकारी राज्य, भूमि सुधार	असमानता घटाने के प्रयास	सामाजिक न्याय नीतियां	भारत में भूमि सुधार, यूरोप में वेलफेयर स्टेट
21वीं सदी	वैश्वीकरण, डिजिटल अर्थव्यवस्था	अमीर-गरीब खाई, डिजिटल डिवाइड	कॉर्पोरेट लॉबिंग, पॉपुलिज्म	अमेरिका, भारत, चीन

ऐतिहासिक केस स्टडी**(क) फ्रांसीसी क्रांति (1789)****आर्थिक पृष्ठभूमि—**

- भूमि और कर व्यवस्था में अमीर वर्ग (अभिजात और पादरी) को विशेषाधिकार।
- आम जनता पर भारी कर, जबकि ऊँचे वर्ग कर मुक्त।

राजनीतिक प्रभाव—

- जनता में असंतोष ने राजशाही का अंत किया।
- समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व के सिद्धांत पर लोकतांत्रिक संविधान की स्थापना।

(ख) रूसी क्रांति (1917)**आर्थिक पृष्ठभूमि—**

- औद्योगिक श्रमिक और किसान गरीबी में, जबकि ज़ारशाही और पूंजीपति संपन्न।
- भूमि और उत्पादन के साधनों का केंद्रीकरण।

राजनीतिक प्रभाव—

- ज़ारशाही का अंत और साम्यवादी शासन की स्थापना।
- आर्थिक समानता और संसाधनों के सामूहिक स्वामित्व का प्रयास।

(ग) भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन (1885—1947)**आर्थिक पृष्ठभूमि—**

- ब्रिटिश शासन के तहत भूमि राजस्व नीतियां, औद्योगिक दमन और निर्यात-आयात में असमानता।
- भारतीय किसानों और कारीगरों की आर्थिक दुर्दशा।

राजनीतिक प्रभाव—

- आर्थिक शोषण ने स्वतंत्रता आंदोलन को वैचारिक आधार दिया।
- स्वदेशी आंदोलन और गांधीजी का आर्थिक-सामाजिक दृष्टिकोण (खादी, ग्राम स्वराज)।

आर्थिक असमानता और राजनीति का परस्पर संबंध— आर्थिक असमानता और राजनीति के बीच संबंध द्विपक्षीय (Two-way) है। राजनीति आर्थिक असमानता को प्रभावित करती है। आर्थिक असमानता राजनीति को प्रभावित करती है। नीति निर्माण में सरकार की कर नीति, सब्सिडी वितरण, और सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रम सीधे तौर पर असमानता के स्तर को प्रभावित करते हैं। पक्षपातपूर्ण आवंटन में कई बार नीतियाँ कुछ खास वर्गों या क्षेत्रों को लाभ पहुँचाने के लिए बनाई जाती हैं, जिससे असमानता बढ़ती है। चुनावी राजनीति में चुनावी चंदे और कॉर्पोरेट लॉबिंग के कारण नीति निर्माण में धनाढ्यों का प्रभाव बढ़ता है। कल्याणकारी योजनाएँ में सही तरीके से लागू होने पर ये योजनाएँ असमानता को कम कर सकती हैं, लेकिन भ्रष्टाचार और अपारदर्शिता इनकी प्रभावशीलता घटा देती है। लोकतंत्र में जनता को प्रतिनिधि चुनने का अधिकार होता है, जिससे गरीब और वंचित वर्ग नीतिगत परिवर्तन की माँग कर सकते हैं। सकारात्मक

पक्ष में जनसहभागिता, सामाजिक न्याय नीतियाँ, आरक्षण, और कल्याणकारी कार्यक्रम है। नकारात्मक पक्ष में लोकलुभावनवाद और वोट बैंक की राजनीति, जो कभी-कभी अल्पकालिक लाभ देकर दीर्घकालिक असमानता को बढ़ा देती है। सत्ता कुछ लोगों के हाथ में केंद्रित होती है, जिससे आर्थिक संसाधनों का नियंत्रण सीमित वर्ग तक सीमित रहता है। राजनीतिक स्वतंत्रता की कमी के कारण गरीब और वंचित वर्ग अपनी आवाज़ नहीं उठा पाते। कुछ मामलों में, केंद्रीकृत योजनाओं से असमानता थोड़ी कम हो सकती है, लेकिन राजनीतिक दमन और पारदर्शिता की कमी इसकी स्थिरता को प्रभावित करती है।

भारत में आर्थिक असमानता और राजनीति— 1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत ने मिश्रित अर्थव्यवस्था का मॉडल अपनाया, जिसमें सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों को स्थान दिया गया। योजना आधारित विकास में पाँच वर्षीय योजनाओं के माध्यम से औद्योगीकरण, कृषि सुधार और सामाजिक कल्याण पर जोर दिया गया। भूमि सुधार में जमींदारी उन्मूलन अधिनियम, भूमि ceiling कानून, और भू-स्वामी किसान संबंधों में सुधार के प्रयास किए गए। सार्वजनिक क्षेत्र का विस्तार में भारी उद्योग, इस्पात, ऊर्जा, और परिवहन में सरकारी निवेश बढ़ाया गया। सामाजिक न्याय में शिक्षा, स्वास्थ्य, और रोजगार योजनाओं के माध्यम से असमानता को कम करने का प्रयास किया गया। प्रारंभिक दशकों में असमानता कुछ हद तक नियंत्रित रही, लेकिन धीमी आर्थिक वृद्धि और बेरोजगारी ने गरीबी को दूर नहीं किया। ग्रामीण-शहरी अंतर और क्षेत्रीय असमानता बनी रही।

उदारीकरण, निजीकरण, वैश्वीकरण का प्रभाव— 1991 में भारत ने आर्थिक संकट के बाद उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण की नीतियाँ अपनाईं। उदारीकरण में उद्योगों और व्यापार पर सरकारी नियंत्रण घटा, लाइसेंस प्रणाली में ढील दी गई। निजीकरण में सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में निजी निवेश और स्वामित्व को बढ़ावा दिया गया। वैश्वीकरण में विदेशी निवेश, अंतरराष्ट्रीय व्यापार, और तकनीकी आदान-प्रदान को प्रोत्साहन मिला। आर्थिक विकास दर 6-8 प्रतिशत तक पहुँची, सेवाक्षेत्र में तेज़ी से वृद्धि हुई, वैश्विक बाजार तक पहुँच बढ़ी, नकारात्मक प्रभाव, आय और संपत्ति की खाई बढ़ी, खासकर उच्च कौशल और निम्न कौशल श्रमिकों के बीच, ग्रामीण और गरीब क्षेत्रों को अपेक्षाकृत कम लाभ मिला, श्रम असुरक्षा और अनौपचारिक क्षेत्र का विस्तार सकारात्मक प्रभाव है।

भारत में आरक्षण नीति का उद्देश्य सामाजिक और शैक्षिक रूप से पिछड़े वर्गों को शिक्षा, रोजगार, और राजनीतिक प्रतिनिधित्व में अवसर प्रदान करना था। संवैधानिक प्रावधान अर्थात् अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, और अन्य पिछड़ा वर्ग को आरक्षण, आरक्षण और सामाजिक न्याय की राजनीति के पहलू हैं। पिछड़े और वंचित वर्गों की राजनीतिक भागीदारी बढ़ी, चुनावी राजनीति में जातिगत समीकरणों का महत्व बढ़ा, सभी राजनीतिक प्रभाव है। आर्थिक रूप से पिछड़े परंतु सामाजिक रूप से अग्रणी वर्ग आरक्षण से बाहर रह गए। कभी-कभी आरक्षण को राजनीतिक हथियार के रूप में इस्तेमाल किया गया, जिससे सामाजिक विभाजन बढ़ा।

आर्थिक असमानता के राजनीतिक परिणाम— आर्थिक असमानता मतदाताओं के व्यवहार को प्रभावित करती है। गरीब वर्ग अक्सर उन दलों का समर्थन करता है जो मुफ्त योजनाएँ और सब्सिडी प्रदान करते हैं।

धनाढ्य वर्ग का प्रभाव चुनावी चंदे, मीडिया प्रचार और लॉबिंग के माध्यम से बढ़ता है। राजनीतिक दल वोट बैंक को आकर्षित करने के लिए अल्पकालिक लाभ वाली नीतियाँ अपनाते हैं, जैसे मुफ्त बिजली, मुफ्त अनाज, ऋण माफी। ये नीतियाँ तात्कालिक राहत देती हैं, परंतु दीर्घकालिक आर्थिक सुधारों और संरचनात्मक बदलावों को कमजोर करती हैं। जैसे तमिलनाडु में मुफ्त लैपटॉप और घरेलू उपकरण वितरण, आंध्र प्रदेश और पंजाब में मुफ्त बिजली योजनाएँ। असमानता बढ़ने पर नीति निर्माण में अमीर वर्ग और कॉर्पोरेट समूहों का प्रभाव अधिक हो जाता है। उद्योगपतियों के पक्ष में कर रियायतें, भूमि आवंटन, और संसाधन उपलब्धता बढ़ जाती है, जबकि गरीब वर्ग के लिए कल्याणकारी योजनाओं का क्रियान्वयन कमजोर हो जाता है। इससे लोकतांत्रिक मूल्यों को क्षति पहुँचती है और असमानता का चक्र गहराता है। आर्थिक असमानता वैश्विक स्तर पर एक आम चुनौती है, लेकिन इसके स्वरूप और नीतिगत प्रतिक्रिया देशों के राजनीतिक ढाँचे, आर्थिक व्यवस्था और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के आधार पर भिन्न होती है।

अमेरिका में असमानता की स्थिति, अमेरिका में Gini Coefficient (गिनी गुणांक गिनी गुणांक (Gini coefficient) एक सांख्यिकीय उपाय है जिसका उपयोग किसी देश या क्षेत्र में आय या धन की असमानता को मापने के लिए किया जाता है। यह 0 से 1 के पैमाने पर मापा जाता है, जहां 0 पूर्ण समानता को दर्शाता है और 1 पूर्ण असमानता को, गिनी गुणांक मुख्य रूप से आय वितरण में असमानता को दर्शाता है, लेकिन इसका उपयोग धन वितरण में असमानता को मापने के लिए भी किया जा सकता है।) लगभग 0.41 (US Census Bureau, 2022)। उच्च शिक्षा की बढ़ती लागत, श्रम यूनियनों की कमजोर होती भूमिका, तकनीकी बदलाव और ऑटोमेशन इसके मुख्य कारण हैं। आयकर दरों में प्रगतिशीलता (progressivity) सीमित, Earned Income Tax Credit (EITC) जैसे कार्यक्रम, संबंधित नीतियाँ हैं। अमीर और गरीब के बीच स्वास्थ्य व शिक्षा में भारी अंतर है, जो सामाजिक गतिशीलता (social mobility) को सीमित करता है विशेष तथ्य है।

चीन में असमानता की स्थिति, 1980 के दशक में Gini Coefficient 0.30 था, जो 2020 में 0.47 तक पहुँच गया। तटीय और अंतर्देशीय क्षेत्रों में आर्थिक विकास का असमान वितरण, शहरी और ग्रामीण आय में अंतर कारण हैं। Common Prosperity पहल के तहत आय पुनर्वितरण, ग्रामीण क्षेत्रों में बुनियादी ढाँचा और शिक्षा पर निवेश, आदि नीतियाँ हैं। चीन ने करोड़ों लोगों को गरीबी से बाहर निकाला, लेकिन तेज़ आर्थिक वृद्धि के साथ असमानता भी बढ़ी विशेष तथ्य हैं। यूरोप में असमानता की स्थिति अर्थात् पश्चिमी यूरोपीय देशों (जैसे नॉर्वे, स्वीडन, डेनमार्क) में Gini Coefficient 0.25–0.30, जबकि पूर्वी यूरोप में 0.30–0.35 है। मजबूत कल्याणकारी राज्य, उच्च कर दर और पुनर्वितरण नीतियाँ, सार्वभौमिक स्वास्थ्य सेवा और मुफ्त शिक्षा, बेरोजगारी भत्ता और सामाजिक सुरक्षा नीतियाँ हैं। यूरोप में सामाजिक गतिशीलता अमेरिका से कहीं अधिक है।

अफ्रीका में असमानता की स्थिति अर्थात् दक्षिण अफ्रीका का Gini Coefficient 0.63 (विश्व का सबसे अधिक) है। जिसके उपनिवेशवाद और रंगभेद की विरासत, भूमि और संसाधनों का असमान वितरण, कारण व भूमि सुधार, सामाजिक अनुदान, शिक्षा व स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार नीतियाँ हैं। कई अफ्रीकी देशों में आर्थिक असमानता जातीय और राजनीतिक तनाव को बढ़ाती है।

तालिका 03

नीति-आधारित तुलनात्मक अध्ययन

देश / क्षेत्र	Gini Coefficient/ गिनी गुणांक	प्रमुख नीति उपकरण	परिणाम
अमेरिका	0.41	सीमित पुनर्वितरण, टैक्स क्रेडिट	उच्च असमानता, कम सामाजिक गतिशीलता
चीन	0.47	ग्रामीण निवेश, कॉमन प्रॉस्पेरिटी	गरीबी में कमी, असमानता बनी रही
नॉर्वे / स्वीडन	0.27	उच्च कर, मुफ्त शिक्षा-स्वास्थ्य	कम असमानता, उच्च सामाजिक गतिशीलता
दक्षिण अफ्रीका	0.63	भूमि सुधार, सामाजिक अनुदान	असमानता घटाने में धीमी प्रगति

आर्थिक असमानता कम करने की नीतियाँ—

आर्थिक असमानता को कम करने के लिए नीतियाँ संरचनात्मक सुधार, सामाजिक निवेश और पुनर्वितरण तंत्र पर आधारित होनी चाहिए। प्रगतिशील कर प्रणाली अथवा उच्च आय वर्ग पर अधिक कर दर लागू करना, संपत्ति कर अथवा भूमि और अचल संपत्ति पर कर से संपत्ति का पुनर्वितरण, कर चोरी पर नियंत्रण अथवा डिजिटल ट्रैकिंग और पारदर्शिता से कर आधार का विस्तार, जैसे नॉर्डिक देशों में 50 प्रतिशत से अधिक उच्चतम आयकर दर आदि कर नीति है। नकद हस्तांतरण अथवा गरीब परिवारों को प्रत्यक्ष नकद सहायता (जैसे PM-Kisan), पेंशन और बीमा अथवा वृद्धावस्था पेंशन, बेरोजगारी बीमा, खाद्य सुरक्षा अथवा सार्वजनिक वितरण प्रणाली का विस्तार और पारदर्शिता, जैसे ब्राज़ील का Bolsa Família कार्यक्रम कल्याणकारी राज्य और सामाजिक सुरक्षा के उदाहरण हैं। समान गुणवत्ता वाली शिक्षा अथवा ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में समान संसाधन, तकनीकी और व्यावसायिक प्रशिक्षण अथवा बेरोजगारी घटाने और कौशल बढ़ाने के लिए, सार्वभौमिक स्वास्थ्य सेवा अथवा प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों का विस्तार और बीमा कवरेज जैसे क्यूबा में मुफ्त और सार्वभौमिक स्वास्थ्य सेवा, उच्च जीवन प्रत्याशा शिक्षा और स्वास्थ्य में निवेश के क्षेत्र की नीतियाँ हैं। आरक्षण और सकारात्मक भेदभाव अथवा हाशिए पर रहने वाले समुदायों के लिए, लैंगिक समानता कार्यक्रम अथवा महिलाओं के लिए कार्यस्थल में समान वेतन और सुरक्षा, विकलांग जन अधिकार अथवा शिक्षा और रोजगार में विशेष अवसर जैसे कनाडा की Employment Equity Policy समान अवसर नीति हैं।

भारतीय संदर्भ में चुनौतियाँ और समाधान— भारत में आर्थिक असमानता का स्वरूप जटिल है, क्योंकि यह केवल आय और संपत्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि जाति, धर्म, क्षेत्र और लिंग के आधार पर भी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। अल्पकालिक दृष्टिकोण अर्थात् नीतियाँ अक्सर तात्कालिक राजनीतिक लाभ के लिए बनाई जाती हैं, दीर्घकालिक संरचनात्मक सुधार की कमी रहती है। असमान वितरण अर्थात् कल्याणकारी योजनाओं का लाभ समान रूप से नहीं पहुँचता, खासकर दूरदराज़ के क्षेत्रों और हाशिए पर रहने वाले समुदायों तक। अधूरी कर व्यवस्था अथवा प्रत्यक्ष कर का अनुपात कम और अप्रत्यक्ष कर का अनुपात अधिक होने से गरीबों पर अपेक्षाकृत अधिक भार। डाटा की कमी अथवा असमानता और गरीबी पर अद्यतन व विश्वसनीय आंकड़ों की अनुपलब्धता नीति निर्माण को बाधित करती है यह नीतिगत खामियाँ हैं। पार्टी राजनीति का प्रभाव अथवा सत्ता में आने वाली सरकारें असमानता घटाने के लिए कठोर लेकिन आवश्यक सुधारों से बचती हैं, क्योंकि वे अल्पकालिक रूप से अलोकप्रिय हो सकते हैं। कॉर्पोरेट लॉबिंग अथवा बड़े उद्योग समूह नीति निर्माण में प्रभाव डालते हैं, जिससे अमीर वर्ग को लाभ पहुंचाने वाली नीतियाँ प्राथमिकता पाती हैं। सत्ता-परिवर्तन और नीति-अस्थिरता अथवा हर नई सरकार पूर्ववर्ती योजनाओं को बदल देती है, जिससे निरंतरता नहीं रह पाती यह राजनीतिक इच्छाशक्ति है। सजग नागरिकता की कमी अथवा ग्रामीण और गरीब तबके में नीति-निर्माण प्रक्रिया में भागीदारी सीमित। सिविल सोसायटी की भूमिका अथवा NGO और सामाजिक आंदोलनों ने कई बार असमानता पर ध्यान खींचा है (जैसे RTI आंदोलन, NREGA निगरानी), लेकिन इनकी पहुँच सीमित है। मीडिया की भूमिका अथवा मीडिया में अक्सर शहरी मध्यम और उच्च वर्ग के मुद्दों को प्राथमिकता दी जाती है, गरीबों के मुद्दों को सीमित कवरेज मिलता है।

दीर्घकालिक आर्थिक योजना अथवा केवल GDP वृद्धि नहीं, बल्कि असमानता घटाने के स्पष्ट लक्ष्य, प्रगतिशील कर सुधार अथवा संपत्ति कर और विरासत कर (Inheritance Tax) का पुनरुपवर्तन, शिक्षा और स्वास्थ्य पर 6 प्रतिशत और 3 प्रतिशत GDP खर्च अथवा जैसा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति और WHO अनुशंसा में है। सामाजिक ऑडिट और पारदर्शिता अथवा हर कल्याणकारी योजना के लिए अनिवार्य हो, डिजिटल समावेशन अथवा ग्रामीण इंटरनेट, डिजिटल भुगतान, और ई-गवर्नेंस से भ्रष्टाचार में कमी होगी यह संभावित समाधान हैं।

निष्कर्ष — आर्थिक असमानता और राजनीति के बीच का संबंध गहरा, बहुआयामी और परस्पर-निर्भर है। असमानता केवल आर्थिक आँकड़ों का मामला नहीं है, बल्कि यह समाज की शक्ति-संरचना, अवसरों के वितरण और राजनीतिक स्थिरता को भी प्रभावित करती है। जब संपत्ति और आय का संकेंद्रण कुछ वर्गों में होता है, तो वह वर्ग न केवल आर्थिक संसाधनों पर बल्कि नीतिगत निर्णय-प्रक्रिया पर भी disproportionate प्रभाव डालता है। भारतीय संदर्भ में, स्वतंत्रता के बाद से अब तक कई आर्थिक और सामाजिक सुधारों के बावजूद असमानता में कमी लाने के प्रयास अपेक्षित परिणाम नहीं दे पाए हैं। उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण (LPG नीति) ने आर्थिक विकास की दर तो बढ़ाई, लेकिन साथ ही आय और अवसरों की खाई भी चौड़ी हुई। आरक्षण, कल्याणकारी योजनाएँ और रोजगार कार्यक्रम जैसे उपाय असमानता को कुछ हद तक कम करने में सहायक रहे हैं, किंतु उनका प्रभाव स्थायी और सर्वव्यापी नहीं रहा। राजनीति पर असमानता का प्रभाव दो तरह से दिखाई देता है पहला, चुनावी राजनीति में लोकलुभावन नीतियों का बढ़ता प्रयोग, और दूसरा, नीति-निर्माण में आर्थिक रूप से शक्तिशाली समूहों का प्रभाव। इससे लोकतांत्रिक मूल्यों

में क्षरण और सामाजिक ध्रुवीकरण की संभावना बढ़ जाती है। अंतर्राष्ट्रीय अनुभव भी यह दर्शाते हैं कि उच्च असमानता वाले देशों में राजनीतिक अस्थिरता, सामाजिक असंतोष और आर्थिक ठहराव की संभावना अधिक रहती है। स्पष्ट है कि आर्थिक असमानता केवल आर्थिक नीतियों से हल नहीं की जा सकती; इसके लिए राजनीतिक इच्छाशक्ति, संस्थागत सुधार, नागरिक भागीदारी और सामाजिक मूल्यों में बदलाव आवश्यक है। कर-नीतियों में प्रगतिशीलता, शिक्षा और स्वास्थ्य में सार्वभौमिक निवेश, क्षेत्रीय असमानताओं को पाटने वाली रणनीतियाँ और डिजिटल समावेशन जैसे कदम असमानता घटाने के लिए अनिवार्य हैं।

इस शोध का केंद्रीय निष्कर्ष यह है कि आर्थिक असमानता को घटाए बिना न तो लोकतंत्र की गुणवत्ता सुरक्षित रह सकती है, न ही दीर्घकालिक और समावेशी आर्थिक विकास संभव है। अतः, एक संतुलित और समान अवसरों वाले समाज की स्थापना के लिए राजनीति और अर्थनीति को परस्पर सहयोगी और समन्वित दृष्टिकोण अपनाना होगा, जिसमें विकास के लाभ सभी तक पहुँचें और कोई भी समूह अवसरों से वंचित न रहे।

अनुशंसाएँ –

1. प्रगतिशील कर-व्यवस्था को सशक्त बनाना

- उच्च आय और संपत्ति पर अधिक कर दरें लागू करना।
- विरासत कर (Inheritance Tax) और संपत्ति कर (Wealth Tax) का पुनर्प्रवर्तन।
- अप्रत्यक्ष करों (जैसे GST) का बोझ गरीब वर्ग पर कम करना।

2. शिक्षा और स्वास्थ्य में दीर्घकालिक निवेश

- शिक्षा पर कम से कम जीडीपी का 6 प्रतिशत और स्वास्थ्य पर जीडीपी का 3 प्रतिशत खर्च सुनिश्चित करना।
- सरकारी स्कूलों और अस्पतालों की गुणवत्ता में सुधार।
- गरीब और ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षकों व डॉक्टरों की उपलब्धता बढ़ाना।

3. सामाजिक सुरक्षा तंत्र का विस्तार

- सार्वभौमिक सामाजिक सुरक्षा (Universal Social Security) की दिशा में कदम।
- वृद्धावस्था पेंशन, बेरोजगारी भत्ता, मातृत्व लाभ जैसे कार्यक्रमों का सार्वभौमिकरण।
- असंगठित क्षेत्र के मजदूरों के लिए बीमा और पेंशन योजनाएँ।

4. रोजगार सृजन के लिए MSME और कृषि क्षेत्र को बढ़ावा

- सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योगों को आसान ऋण, तकनीकी सहायता और बाज़ार तक पहुँच।
- कृषि अवसंरचना (Storage Processing Units) में निवेश।
- ग्रामीण क्षेत्रों में गैर-कृषि रोजगार के अवसर बढ़ाना।

5. आरक्षण नीति का आर्थिक सशक्तिकरण से संयोजन

- आरक्षण को केवल राजनीतिक प्रतिनिधित्व तक सीमित न रखकर आर्थिक अवसरों और कौशल विकास से जोड़ना।

- वंचित वर्गों को उद्यमिता और व्यावसायिक प्रशिक्षण में विशेष सहायता।

6. पारदर्शी और जवाबदेह शासन प्रणाली

- ई-गवर्नेंस और सोशल ऑडिट का विस्तार।

- सभी सरकारी योजनाओं की जानकारी सार्वजनिक पोर्टलों पर उपलब्ध कराना।

- भ्रष्टाचार पर कड़ी निगरानी और दोषियों पर त्वरित कार्रवाई।

7. क्षेत्रीय असमानताओं को घटाने के लिए विशेष नीति

- पिछड़े राज्यों और जिलों के लिए विशेष आर्थिक पैकेज।

- बुनियादी ढांचे, शिक्षा और स्वास्थ्य पर प्राथमिक निवेश।

- क्षेत्रीय औद्योगिक क्लस्टर और कौशल विकास केंद्र स्थापित करना।

8. डिजिटल समावेशन और इंटरनेट पहुंच

- ग्रामीण क्षेत्रों में सस्ती और तेज़ इंटरनेट सेवा।

- डिजिटल भुगतान और ऑनलाइन सेवाओं को आसान और सुरक्षित बनाना।

- डिजिटल साक्षरता कार्यक्रम, खासकर महिलाओं और युवाओं के लिए।

9. नीति-निर्माण में नागरिक सहभागिता

- ग्राम सभाओं और स्थानीय निकायों को अधिक अधिकार और संसाधन।

- नीति-निर्माण प्रक्रिया में नागरिकों और सिविल सोसाइटी की सक्रिय भागीदारी।

- Participatory Budgeting मॉडल का प्रयोग।

10. असमानता पर नियमित और पारदर्शी डाटा प्रकाशन

- हर दो साल में राष्ट्रीय असमानता रिपोर्ट जारी करना।

- गिनी गुणांक, पाम रेशियो, और HDI असमानता घटक को नियमित रूप से अपडेट करना।

- डाटा को नीति-निर्माताओं और शोधकर्ताओं के लिए खुला और सुलभ रखना।

सन्दर्भ सूची –

1- Piketty, T. Capital in the Twenty-First Century. Harvard University Press. ISBN: 9780674430006

2- Sen, A. Development as Freedom. Oxford University Press. ISBN: 9780198297581

3- Stiglitz, J. E. The Price of Inequality. W.W. Norton & Company. ISBN: 9780393345063

4- Milanovic, B. Global Inequality. Harvard University Press. ISBN: 9780674737136

5- Drèze, J., & Sen, A. An Uncertain Glory: India and its Contradictions. Penguin. ISBN: 9781846147616

- 6- Desai, M., et al. India Human Development Report. Oxford University Press. ISBN: 9780198070214
- 7- Basu, K. An Economist in the Real World. MIT Press. ISBN: 9780262529409
- 8- Frank, R. H. Falling Behind: How Rising Inequality Harms the Middle Class. University of California Press. ISBN: 9780520267190
- 9- OECD. In It Together: Why Less Inequality Benefits All. OECD Publishing. ISBN: 9789264235120
- 10- Atkinson, A. B. Inequality: What Can Be Done?. Harvard University Press. ISBN: 9780674504769
- 11- Bhalla, S. The New Wealth of Nations. Simon & Schuster. ISBN: 9789386021401
- 12- UNDP. Human Development Report. UNDP. ISBN: 9789211264364
- 13- Government of India. Economic Survey. Ministry of Finance. ISBN: 9789388022253
- 14- World Bank. Poverty and Shared Prosperity Report. World Bank. ISBN: 9781464816024
- 15- Chancel, L., Piketty, T. Indian Income Inequality, 1922-2015. WID.world Working Paper. ISBN: 9782957763925
- 16- Bhagwati, J., Panagariya, A. India's Tryst with Destiny. HarperCollins. ISBN: 9789350293599
- 17- Bardhan, P. The Political Economy of Development in India. Oxford University Press. ISBN: 9780198286301
- 18- Kumar, A. Political Economy of Inequality. Routledge India. ISBN: 9780367543157
- 19- Patnaik, P. Accumulation and Stability Under Capitalism. Oxford University Press. ISBN: 9780198071075
- 20- Roy, T. The Economic History of India. Oxford University Press. ISBN: 9780198074175
- 21- Ghosh, J. Never Done and Poorly Paid. Women Unlimited. ISBN: 9788188965291
- 22- International Labour Organization. World Employment and Social Outlook. ISBN: 9789221304274
- 23- FAO. The State of Food and Agriculture. ISBN: 9789251314575
- 24- Oxfam International. Time to Care. ISBN: 9781780773022
- 25- Mishra, S. Growth, Inequality and Social Development in India. Springer. ISBN: 9788132228194
- 26- Gupta, D. Caste in Question. Sage Publications. ISBN: 9780761933506
- 27- Thorat, S., Newman, K. Blocked by Caste. Oxford University Press. ISBN: 9780198065142
- 28- Banerjee, A., Duflo, E. Poor Economics. Random House. ISBN: 9788184002808
- 29- Ray, D. Development Economics. Princeton University Press. ISBN: 9780691017068
- 30- Kuznets, S. Economic Growth and Income Inequality. W.W. Norton. ISBN: 9780393004533